कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

नारी–शक्ति दिवस

नारी शक्ति में देश भक्ति का,
अनुपम एक उदाहरण है।
कारा हो या हो धिक्कारा,
देश-धर्म स्वीकारा है।।

राणी सा नेतृत्व दिया था,
माँ सम हमें दुलारा है।
रानी मां गाइदिन्ल्यु का ऋण,
हमने नहीं बिसारा है।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 33, अंक 1
जनवरी-मार्च 2022 (विक्रम संवत् 2079)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद
-:सह सम्पादक:-
डॉ. रंजना त्रिपाठी
–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गाँधी रोड, बाँगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता-7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- वैश्विक विकास की दौड में... 2
- नगरीय कार्य क्यों ?..... 3
- मकर संक्रांति के सूर्य पर्व... 5
- महान स्वतंत्रता सेनानी - रानी... 6
- बागमुंडी छात्रावास 9
- स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ... 10
- पद्मश्री कमली सोरेन का हुआ सम्मान 10
- शोक संवाद 11
- लिथुआनिया: वैदिक संस्कृति राष्ट्र 12
- e-vidya के बढते कदम 14
- अनुकरणीय बनें शुभ आचरण... 15
- कोलकाता हावड़ा महानगर ने... 16
- कविता ..... ज्ञान-दीप 16

वैश्विक विकास की दौड़ में भारत को अग्रणी बनाएं

यह वर्ष भारत की स्वतन्त्रता का 75वां वर्ष है। हम सबको मिलकर अपने प्राणप्रिय देश को अपने हाथों से संवारना है। भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन, गोरक्षा, गंगा की पवित्रता, काले धन की वापसी, श्री अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण, पर्यावरण संरक्षण, सीमा सुरक्षा, साम्प्रदायिक सौहार्द, संस्कार युक्त शिक्षा, संस्कृति रक्षा, राष्ट्रवादी साहित्य, महिला सशक्तिकरण आदि के लिए हो रही गतिविधियां भारत निर्माण की छटपटाहट का ही प्रकटीकरण है। जैविक खेती को बढ़ावा देने से विकास को नई गति मिलने के आसार हैं। आत्मनिर्भर भारत मिशन को बढ़ावा देने और कौशल विकास पर जोर देने से युवा लाभान्वित हो रहे हैं। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि सभी दिशाओं से भारत का चित्र बदल रहा है और देश सकारात्मक विकास की दिशा में अग्रसर हो रहा है। दिल्ली में इस बार गणतंत्र दिवस की परेड में गुजरात के जनजाति क्रांतिवीरों की झांकी प्रदर्शित की गई। वर्ष 1922 में गुजरात के साबरकांठा जिले के पाल और डलवाओ गांव में धूर्त अंग्रेजों ने जलियांवाला बाग से भी भीषण हत्याकांड को अंजाम दिया था जिसमें लगभग 1200 जनजाति-वनवासी नागरिक बलिदान हो गए थे। जलियांवाला बाग की घटना के लगभग 3 वर्ष बाद हुए इस भीषण नरसंहार की घटना को इतिहास में पूरी तरह से छुपा दिया गया। किंतु अब इस अज्ञात ऐतिहासिक घटना को 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। राष्ट्र भाव के जागरण का ही परिणाम है कि गुजरात सरकार ने अपनी झांकी में अंग्रेजों की तानाशाही प्रवृत्तियों से हुए भीषण नरसंहार और जनजातियों की शौर्य गाथा को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। वस्तुत: भारत को जानना एवं भारतवासियों को भारत की पहचान करा देना यही हमारा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है। *हम सबको जो होता है होने दो की भूमिका में नहीं बल्कि "जो हम चाहेंगे होगा" की पुरुषार्थी भूमिका में सक्रिय होना होगा*। हमें स्वीकार करना होगा कि अपने शोषित, पीड़ित, उपेक्षति बंधुओं की उन्नति की चेष्टा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। वंचित एवं पददलित बंधुओं को समाज में उचित सम्मान मिलना चाहिए। ऐसे अवसर उपलब्ध करवाये जाये ताकि राज्य के लोगों को रोजगार के लिए बाहर न जाना पड़े। दुनिया के विकसित राष्ट्रों की सूची में आने का हमारा सपना तभी पूरा होगा जब हम पैसे का इस्तेमाल विकासपरक योजनाओं पर करेंगे। हमारे ऋषि-ऋषिकाओं, महर्षि दयानंद, स्वामी विवेकानंद, राजगुरु, चंद्रशेखर, भगत सिंह जैसे वीर-वीरांगनाओं और महापुरुषों ने स्वावलंबी, स्वाभिमानी, शक्तिशाली, सांस्कृतिक और संगठित भारत के निर्माण के जो सपने देखे थे उन्हें पूरा करने के लिए कृतसंकल्पित बने। भारत के नवनिर्माण के लिए स्वामी जी के अग्नि अभिषिक्त मंत्र को भारतवासी सदैव स्मरण रखें - *"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"* अर्थात उठो जागो और लक्ष्य प्राप्ति किए बिना विश्राम मत लो। राष्ट्र के गौरव में ही हमारा गौरव हो, इस समष्टि भाव के साथ देश के सर्वांगीण विकास की राह हम सभी प्रशस्त करें। इति शुभम्।

- स्नेहलता बैद

नगरीय कार्य क्यों ?.....

- भगवान सहाय, अ.भा. नगरीय कार्य प्रमुख

वनवासी कल्याण आश्रम के सम्बंध में सामान्यतया अधिकतम नगरवासियों के बीच में यही समझा जाता है कि वनवासी समाज के कल्याण तक ही संस्था का कार्य क्षेत्र सीमित है। इस बात की पुष्टि इस तथ्य से भी होती है कि हमारे अधिकांश सेवा प्रकल्प वनवासी समाज के विकास हेतु ही चल रहे है। कार्य की वार्षिक उपलब्धियों के विवरण में भी यही संदर्भ आते है कि इस वर्ष -

★ इतने प्रकल्प बढ़े,

★ इतने प्रकल्प स्थान बढ़े,

★ इतने वनवासी ग्रामों में हमारा सम्पर्क हुआ,

★ इतनी ग्राम समितियाँ है,

★ इतनी जनजातियो में अपना संपर्क हो गया है

★ और अभी इतनी जनजातियों मे संपर्क करना बाकी है आदि।

संगठन की पत्रिकाओं में भी वनवासी स्वर ही मुख्य रूप से रहता है। हमारे कार्यक्रमों में भी वनवासी की अवस्था का ही चित्रण रहता हे। अर्थात सभी कोनों से कल्याण आश्रम का कार्य केवल वनवासियों के लिए है, ऐसा किसी को भी लग सकता है। हाँ! एक ही दिशा ऐसी है, जो हमे शहरों से जोडती है। वह है सामाजिक समरसता। जनजाति समाज सम्पूर्ण समाज के साथ अभिन्न रूप में जुड़ा है, यह हमारे कार्य की प्रेरणा है।

इस कार्य के लिए साधनों का संग्रह स्वाभाविक तौर पर शहरों से होता है। तो शहर के कार्यकर्ताओं को इस नाते कार्य का महत्व और आवश्यकता समझनी पड़ती है। वनवासी क्षेत्र में चलने वाले प्रकल्पों के लिए केवल धन एवं वस्तु संग्रह करना ही अपना कार्य है, ऐसा शहरों की समितियाँ एवं कार्यकर्ता समझते है। यह नगरीय कार्यकर्ताओं का सौभाग्य है कि वे एक बड़े राष्ट्रीय कार्य के साथ जुड़े है। नि:संदेह साधन संग्रह अत्यंत महत्व का विषय है। अत: सामान्य व्यक्ति यही समझता है कि वनवासी कल्याण आश्रम केवल वनवासी समाज के कल्याण की कामना करता है। इस कार्य के लिए शहरवासियों से धन प्राप्त करना ही इसका एकमात्र लक्ष्य है। यह विचार सिर्फ अधूरा ही नहीं अपितु दोषपूर्ण भी है। इस आधार पर तो वनवासी हमेशा प्राप्त करने वाला और शहरवासी हमेशा देने वाला दान-दाता ही बना रहेगा। यह विचार वनवासी के स्वाभिमान पर स्पष्ट रूप से आघात होगा।

वनवासी समाज सांस्कृतिक धरातल पर हमारा अग्रज है। नगरवासी प्रगति की दौड़ में अपनी वेशभूषा, खान-पान, आचार-व्यवहार बदल चुका है। जीने की शैली बदल चुका है ताकि भौतिकता की दौड़ में आगे आकर वह अपने आपको बड़ा समझे और अधिक सुविधाएं प्राप्त करे। अर्थात् हम नगरवासियों ने सनातन संस्कार छोड़ दिए हैं जबकि वनवासियों ने सदियों तक कष्ट पाकर भी अपने धर्म को बचाए रखा है। हजारों मिशनरी वनवासी के पास स्वयं जाते हैं। उसे अनेक प्रकार की सुविधाएँ देते हैं, लालच देते हैं। तब भी वनवासी अपना धर्म नहीं छोड़ता। अपने संस्कार नहीं छोड़ता। अर्थात् संस्कारों और संस्कृति की दृष्टि से वे महान हैं।

नगरीय कार्य का महत्वपूर्ण पक्ष है कि शहरवासी जीवन के उद्देश्य को सही प्रकार से समझे। वे जानें कि जीवन की सार्थकता उपभोग और संग्रह में नहीं बल्कि त्याग में हैं। अत: हम कह सकते हैं कि वनवासियों के माध्यम से सम्पूर्ण समाज के कल्याण का यह एक सार्थक प्रयत्न है। नगरों में कल्याण आश्रम की समितियां वनवासी प्रकल्पों के लिए साधन जुटाती है। वन क्षेत्र में शिक्षा, चिकित्सा, आर्थिक विकास के लिए साधन जुटाती है। वन क्षेत्र में आज शिक्षा, चिकित्सा, आर्थिक विकास की दिशा में हमें कमियां दिखाई देती है। अगर नगर में रहने वाला समाज 100 वर्ष पूर्व ही जागृत एवं सचेत होकर वन क्षेत्र के बारे में सक्रिय हुआ होता तो वनांचल की स्थिति कुछ और ही होती। नगरीय समाज की उदासीनता, उपेक्षा एवं वन क्षेत्र और वनवासी समाज के बारे में अज्ञानता के कारण आज राष्ट्र विरोधी, असामाजिक एवं विघटनकारी शक्तियां वन क्षेत्र में अपनी जड़ें जमाए हुए हैं। भोला-भाला वनवासी समाज उसका शिकार बन गया है। अत: समस्त नगरवासियों के ध्यान में यह लाना है कि वनवासी समाज इसी राष्ट्र पुरुष का अभिन्न अंग है। संस्कृति व राष्ट्र की सुरक्षा में वह सबसे आगे है। सनातन संस्कृति के जीवन मूल्यों को शुद्ध रूप से वनवासी समाज आज भी संभाले हुए है। अत: नगरीय समाज एवं वनवासी समाज के मध्य आत्मीय संपर्क स्थापित होने से जहाँ एक ओर अपने वनवासी समाज की भौतिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा वहीं दूसरी ओर नगरीय परिवारों में सांस्कृतिक जीवनमूल्यों की संभावनाएँ बढ़ सकती है। आज नौकरी-व्यवसाय के कारण अथवा एक श्रमिक के रूप में कई वनवासी भाई-बहन शहरों में आकर निवास कर रहे हैं। उनके साथ समरस होकर संपर्क, संवाद, साहित्य, संगोष्ठियों के माध्यम से सद्विचारों का प्रसारण हम नगरीय क्षेत्र में भी कर सकते है। वनयोगी बाला साहब देशपांडे कहते थे - "नगरीय समाज से केवल धन की अपेक्षा करने के बदले, उसे कार्य के साथ, विचार के साथ जोड़ें। समय देने की अपील करे तो कार्य को अधिक लाभ होगा।" आज घर परिवार की जिम्मेदारियाँ पूरी करके अपने जीवन के अनुभवों को वानप्रस्थी के रूप में भी समाज के लिए लगाने की आवश्यकता है।

सच है कि जैसे-जैसे कार्य बढ़ रहा है, वैसे-वैसे आर्थिक आवश्यकताएँ भी बढ़ रही है किन्तु नगरीय कार्य कंवल धन संग्रह ही नही, व्यक्ति संग्रह करना भी है। समाज के अनुभवी लोग है, उन्हें सेवा कार्यों से जोडें। तभी नगरीय कार्य की सार्थकता सिद्ध होगी। दूसरी एक महत्वपूर्ण बात - हम नगरीय समाज को वनवासी समाज के साथ समरस करें। "तू-मैं एक रक्त" इस ध्येय वाक्य को नगरीय कार्य के माध्यम से चरित्तार्थ करें। अपनेपन और आत्मीयता का भाव जागृत कर कर्तव्य बोध की ओर अग्रसर हों। इस हेतु विविध प्रकार के कार्यक्रमों, उपक्रमों की योजना भी हम करते ही हैं। नगरीय समाज को वननासी क्षेत्र में हो रहे कार्य से जोड़े जिससे उनमें कार्य के प्रति कर्तव्य भाव जगे, वन क्षेत्र की समस्याओं एवं चुनौतियों के प्रति जागृत करें, वन क्षेत्र का दर्शन एवं भ्रमण करें जिससे वे एकात्म भाव से समरस हो सकें। जनजाति समाज की गुण सम्पदा की सही पहचान करें, वनवासियों के गौरवशाली इतिहास को जानें और सम्मान करें; यह भी परमावश्यक है। ■

मकर संक्रांति के सूर्य पर्व
पर कल्याण आश्रम की संकल्प शक्ति

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, कार्यकर्ता, दक्षिण समिति

अब हम ऐसी रात ना होने देंगे,
सब मिलकर सूरज को भी रोशनी देंगे,
थक के ढल जाए चाहे सूरज भी,
अपनी रोशनी से शाम न होने देंगे,
हर चिराग ने मन में ठाना हुआ है,
रात लंबी थी अब उजाला हुआ है।

सूर्यदेव जब मकर राशि में प्रवेश करते हैं तब मकर संक्रांति कहलाती है। सूर्य की दक्षिणायन यात्रा के समय जो देवप्राण शक्तिहीन हो गये थे उनमें पुन: नई ऊर्जा शक्ति का संचार हो जाएगा और वे अपने भक्तों-साधकों को यथोचित फल देने में सामर्थ्यवान हो जाएंगे। हिंदू धर्म में मकर संक्रांति के पर्व को अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व बताया गया है। इस दिन पवित्र नदी में स्नान और दान करना शुभ माना गया है। मकर संक्रांति पर सूर्य देव उत्तरायण होते हैं। मान्यता के अनुसार इस दिन से ही ऋतु में परिवर्तन आरंभ हो जाता है। मकर संक्रांति से सर्दी में कमी आने लगती है यानि शीतऋतु के जाने का समय आरंभ हो जाता है और बसंत ऋतु का आगमन शुरू हो जाता है।

तिलवत् स्निग्धं मनोऽस्तु वाण्यां गुडवन्माधुर्यम्
तिलगुडलड्डुकवत् सम्बन्धेऽस्तु सुवृत्तत्त्वम्।

वनवासी भाई-बहनों के सर्वांगीण विकास हेतु गणेश पूजन के अवसर पर धन-संग्रह का संकल्प ले लिया गया। सभी समितियों ने अपने-अपने संकल्प को निर्धारित भी कर लिया। मकर संक्रांति के अवसर पर कार्यकर्ताओं द्वारा लगाया जाने वाला कैम्प इस धन-संग्रह का सबसे बड़ा स्रोत होता है। परंतु कोरोना महामारी की तीसरी लहर ने दस्तक देना प्रारंभ कर दिया। और मकर संक्रांति पर की जाने वाली समाज की स्वाभाविक दान-परंपरा की धारा अवरुद्ध सी होती दिखाई देने लगी। किंतु पूर्वांचल कल्याण आश्रम के प्रत्येक कार्यकर्ता के उत्साह और अदम्य साहस के आगे कोरोना की लहर मकर संक्रांति पर लगने वाले कैम्पों की गति अवरुद्ध न कर सकी।

कोलकाता में प्रतिदिन हज़ारों की संख्या में कोरोना संक्रमितों की बढ़त होते हुए भी महानगर कार्यकर्ताओं के अदम्य उत्साह और साहस को नमन करना होगा, जिन्होंने अपने आसपास के परिसर में मकर संक्रांति शिविर लगाया। कोलकाता-हावड़ा महानगर में कुल मिलाकर 70 कैम्प लगे। दानदाताओं ने आगे बढ़कर मुक्त हस्त से वस्तु-दान, अन्न-दान और धन-दान किया तथा मकर संक्रांति के पावन पर्व का पुण्य-लाभ उठाया। तीसरी लहर के चरम पर होते हुए भी कोलकाता-हावड़ा के सेवाभावी और उदारमना वासियों ने मुक्त हस्त से अपने वनवासी भाई-बहनों के उन्नयन के लिए सहयोग किया। कल्याण-भवन का गोदाम भर गया। समाज का यह उदार मनोभाव देखकर अपने कार्यकर्त्ता भगिनी-बन्धु का चित्त भी आह्लादित हुआ। राष्ट्र के आराधन में लगे आराधकों को मुट्ठी भर सराहना और वनवासी बंधुओं के प्रति विराट समाज का आत्मीय भाव उनके पंखों को उड़ान देती है, उनके उत्साह के दीपक में ऊर्जा और ओजस्विता का तैल भर देती है। ■

महान स्वतंत्रता सेनानी : रानी गाइदिन्ल्यू

- जगदम्बा मल्ल, पूर्व संगठन मंत्री, नागालैंड

रानी गाइदिन्ल्यू को पूर्वोत्तर भारत की रानी लक्ष्मीबाई कहा जाता है। अंग्रेजों ने इन्हें "पूर्वोत्तर का आतंक" कहा। नेहरु जी 1937 में इनसे शिलांग जेल में मिले, नमन किया और "नागाओं की रानी" कहा। कांग्रेस के हरिपुरा (गुजरात) अधिवेशन में इनको जेल मुक्त करने के लिए सुभाष बाबू की अध्यक्षता में एकमत से प्रस्ताव पारित हुआ। खूंखार आतंकवादी और एन.एन.सी प्रमुख अंगामी जापू फीजो लंग्काओ नें इनसे मिलकर समर्थन माँगा जिसको इस नारी-रत्न ने बेधड़क ठुकरा दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इन्हें असाधारण महिला बताया जो अपने पौरुष के बल पर सबकी माँ – रानी माँ बन गईं। चमत्कारी व्यक्तित्व के कारण इन्हें देवी दुर्गा का अवतार माना गया, जिनके हाथ का स्पर्श किया हुआ जल औषधि (तेलाउ दुई) बन जाता था। नागाओं के लिए रहस्यमयी, पूर्वोत्तर के लिए रहस्यमयी, पूरे भारतवर्ष के लिए रहस्यमयी जिसके सपने में भी आने पर फीजो के आतंकवादी चौंक पड़ते थे; ऐसी रानी माँ को आजादी के दो माह बाद छोड़ा गया। आजाद भारतवर्ष में पांच वर्ष तक गृह-कैद में रखकर जिनको अपने गाँव नहीं जाने दिया गया। आजाद देश में छ: वर्ष तक दुबारा भूमिगत होकर सशस्त्र संग्राम करना पड़ा। ऐसे विस्मयकारी पौरुष वाली वह गाइदिन्ल्यू आखिर है कौन?

बचपन

जेलियांगरांग नागा समुदाय के रांग्मई जनजाति में 26 जनवरी 1915 को मणिपुर में तमेंग्लांग जिला के लंग्काओ ग्राम में जन्मी गाइदिन्ल्यू के पिता लोथोनांग समाज व्यवस्था में शासक की भूमिका निभाने वाले पामई समाज के अगुआ थे। माता केलुवतलिन्ल्यू ईश्वर भक्ति में लीन एक साध्वी नारी थीं। अपने माँ-बाप के आठ बच्चों में से सातवीं संतान गाइदिन्ल्यू जन्म से ही एक असाधारण बालिका थी। दैवी-शक्ति संपन्न गाइदिन्ल्यू की स्कूली शिक्षा नहीं हुई थी किन्तु बड़े–बड़े अंग्रेज और भारतीय अधिकारियों, खूंखार नागा आतंकवादी प्रमुखों और इसाई मिशनरियों के दांत खट्टे कर देती थीं।

स्वतन्त्रता संग्राम

जेलियांगरांग समाज मणिपुर के तमेंग्लांग जिला, असम के दिमा हसाओ जिला और असम व दिमा हसाओ को जोड़ने वाला नागा हिल्स का भूभाग - इन तीन क्षेत्रों में रहता है। यहाँ अंग्रेज अपने शासन का विस्तार कर रहे थे। गाइदिन्ल्यू के गुरु **हेपाउ जादोनांग** "रीफेन" नामक सशस्त्र जेलियांगरांग

सेना का गठन कर अंग्रेजों का बहिष्कार कर रहे थे। गाइदिन्ल्यू रीफेन के महिला ब्रिगेड की कमांडर थी। चार मणिपुरियों की हत्या का मिथ्या आरोप लगा कर अंग्रेजों ने 29 अगस्त 1931 को इम्फाल में जादोनांग को फांसी दे दी। इनके बाद गाइदिन्ल्यू ने सेना की कमान संभाली और अंग्रेजी सेना पर आक्रमण आरम्भ किया। 16 मार्च 1932 को असम के हंग्रुम ग्राम में अंग्रेजों के सैन्य शिविर (असम राइफल्स) पर धावा बोलकर उनके पांच सैनिकों को भरी दुपहरी में ही मार डाला। घनघोर लड़ाई में रीफेन के सात जवान शहीद हुए। जनवरी 1965 में नागालैंड के पेरेन जिला के नौलंग गाँव में NNC के सशस्त्र आतंकवादियों और रानी माँ के सैनिकों के बीच मुठभेड़ हो गई जिसमें NNC के सभी 9 आतंकवादी मारे गए। रानी सेना के सभी जवान सुरक्षित थे।

धर्म जागरण

जनजाति क्षेत्र के प्राय: सभी स्वतंत्रता सेनानी या तो सन्यासी थे या फिर सन्यासी प्रवृत्ति के थे क्योंकि शैतान अंग्रेज राजनीतिक आक्रमण के साथ धर्म व संस्कृति पर भी प्रहार करते थे। जेलियांगरांग क्षेत्र में भी यही हुआ। इसलिए रानी माँ ने अपने गुरु हेपाउ जादोनांग द्वारा प्रस्तुत जेलियांगरांग हरक्का नामक धर्म सुधार आन्दोलन का गाँव-गाँव में विस्तार किया। हरक्का मंदिरों का निर्माण कर रांगमई वेष में देवी लक्ष्मी और विष्णु भगवान की प्रतिमा स्थापित की, पुराने भजनों का संकलन किया, नए भजनों और गीतों की स्वयं रचना की, उसे प्रकाशित कर प्रचार किया, नवीन पूजा-पद्धति विकसित कर प्रचारित किया ताकि ईसाइ मिशनरियों का सामना किया जा सके। हरक्का मंदिर और परिमार्जित जेलियांगरांग परम्पराओं के इर्द-गिर्द पूरे समाज को संगठित किया। दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक, चर्च से बाइबिल की शिक्षा प्राप्त (Theologian) और नागालैंड के इम्तुमा ग्रामवासी पाउ नौगाइंग चम्थ्यू जेलियांग (पाउ एन सी जेलियांग) को हरक्का धर्म में घर-वापसी कराकर 1 जनवरी 1974 को जेलियांगरांग हरक्का एशोसिएसन (पूर्वोत्तर क्षेत्र) का कार्यकारी अध्यक्ष बनाया, असम के लोदी ग्रामवासी और शिलांग के एक महाविद्यालय से स्नातक रामकुईवांग्बे न्यूमे को संगठन का महामंत्री बनाया, 1976 में भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम से सम्बंध बनाया और हरक्का धर्म और संगठन को शक्तिशाली बनाया। भुवन पहाड़ की संगठित धर्म यात्राएं शुरू कीं। गाँव-गाँव में हरक्का मंदिर बनवाये। स्वयं छोटे-बड़े सभी गाँवों का प्रवास कर समाज को ईसाइ मिशनरियों के कुचक्र से सावधान करती थीं। हिन्दू समाज, हिन्दू धर्म और हिन्दुस्थान के बारे में चर्च द्वारा प्रचारित भ्रम को दूर करती थीं। आपने अंग्रेजी शासन और चर्च का पूर्ण बहिष्कार किया।

आपरेशन गाइदिन्ल्यू, 18 अक्तूबर 1932

गाइदिन्ल्यू से परेशान मणिपुर राज दरबार का अध्यक्ष हार्वे (अंग्रेज अधिकारी) ने मणिपुर राजा की इच्छा के विपरीत जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिए पहले 200 रुपये और बाद में 500 रुपये पुरस्कार की घोषणा की, इसको पकड़वाने वाले गाँव को दस वर्ष के लिए कर-मुक्त करने का ऐलान किया और इस काम के लिए चर्च को लगा दिया। धर्मान्तरित सभी इसाई रानी माँ का विरोध नहीं करते थे। कुछ पापी लोग ही चर्च का साथ देते थे। पोइलुवा ग्राम का जेमी नागा डॉ. हरालू ऐसे ही पापियों में से एक था जिसने धन के लालच में रानी माँ के खिलाफ जासूसी कर 18 अक्तूबर 1932 को पोइलुवा ग्राम से रानी गाइदिन्ल्यू को कैद करवाया।

विभिन्न जेलों में

गाइदिन्ल्यू की दैवी शक्ति, संगठन कौशल और लोकप्रियता से भयभीत होकर अंग्रेजों ने उन्हें कोहिमा जेल में दो माह, इम्फाल में पांच माह, गुवाहाटी में एक साल, शिलांग में तीन वर्ष, आइजोल में तीन वर्ष और तूरा जेल में अक्तूबर 1947 तक रक्खा।

पं. नेहरु द्वारा जेल-मुक्त करने के प्रयास

जून 1938 में नेहरु जी ने प्रभावशाली ब्रिटिश कन्जर्वेटिव सांसद लेडी नैंसी एस्टर तथा इनके सहयोगी सांसदों से आग्रह कर गाइदिन्ल्यू को जेल से छुड़वाने का प्रयास किया किन्तु अंग्रेजों ने इन्हें 'पूर्वोत्तर का आतंक" और 'खतरनाक नागा लड़की" कहकर जेल से रिहा करने से इनकार कर दिया।

अंग्रेज तो अंग्रेज, आजाद भारतवर्ष में भी असम और मणिपुर की राज्य सरकारें इनको खतरनाक ही मानते थे और इसलिए इन्हें जेल से नहीं छोड़ना चाहते थे। अपने यहां स्थान देने से इनकार कर दिया। नेहरु जी को जब पता चला तो उन्होंने दोनों राज्य सरकारों पर नाराजगी जताई और गाइदिन्ल्यू को तत्काल रिहा करने हेतु आदेश दिए। गाइदिन्ल्यू को रिहा तो कर दिया गया परन्तु कोई भी उन्हें अपने राज्य में रखने पर राजी नहीं हुआ। अरे! अपने गाँव लंग्काओ भी नहीं आने दिया। इसलिए इन्हें नागा हिल्स जिला के यिमरूप नामक चांग नागा के गाँव में 1952 तक गृह कैद में रखा गया।

एन.एन.सी से संघर्ष

1952 से 1959 तक तमेंग्लांग और लंग्काओ में रहकर हरक्का धर्म का प्रचार करने और सार्वजनिक कल्याणकारी कार्यों में बिताया किन्तु एन.एन.सी (नागा नेशनल कौंसिल) के आतंक को रोकने के लिए इन्होंने 1960 में दुबारा हथियार उठाया, एक हजार जवानों की सेना खड़ी की और 1966 तक फीजो के आतंकवादियों तथा चर्च के धर्मान्तरण के कुचक्र से देश और धर्म की रक्षा करती रहीं।

कोहिमा में

कोहिमा के फारेस्ट कालोनी में टाइप 5 सरकारी आवास (AF/69) में पुलिस सुरक्षा में ये रहती थीं। इनका पूरा व्यय और प्रवास खर्च राज्य सरकार करती थी। इनका घर एक पर्यटन स्थल हो गया था।

संघ व विश्व हिन्दू परिषद में

विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित जोरहाट हिन्दू सम्मलेन 1969 में ये श्रीगुरु जी और पेजावर मठ के स्वामी विश्वेशतीर्थ महाराज को मिलीं थीं। प्रयागराज में महाकुम्भ के अवसर पर 24, 25, 26 जनवरी को विहिप द्वारा आयोजित द्वितीय विश्व हिन्दू सम्मलेन में भाग लिया। दिल्ली में संघचालक लाला हंसराज जी की उपस्थिति में रानी माँ संघ के एक कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि थीं।

वनवासी कल्याण आश्रम में

कल्याण आश्रम से रानी माँ का सम्बन्ध 1976 से ही था। इनके आशीर्वाद के कारण कल्याण आश्रम के कार्य का जेलियांगरांग के अलावा अंगामी व चाखेसांग क्षेत्रों में विस्तार हुआ। नागा छात्र-छात्राओं को नागालैंड से बाहर मैसूर, गोरखपुर, रायपुर, दिल्ली, ग्वालपाड़ा (लक्खीपुर), नागपुर, रुद्रपुर और डोम्बिवली आदि स्थानों पर भेजा जा सका। जेलियांगरांग हरक्का स्कूल इनके कारण ही खोला जा सका। रानी माँ कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं की रक्षा-कवच थीं।

राष्ट्रीय अधिकारियों के संग

वनवासी कल्याण आश्रम के रामभाऊ गोडबोले, वसंत राव भट्ट, बाला साहब देशपांडे, अरुणा होल्समुद्रकर, विहिप के अशोक सिंघल और राष्ट्र

सेविका समिति के ताई आप्टे, प्रमिला ताई मेढे और स्वनामधन्य समाजसेविका अनुताई बाघ से इनके आत्मीय सम्बन्ध थे।

राष्ट्रीय समस्याओं पर

विभिन्न राष्ट्रीय समस्याओं पर रानी माँ राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री को लम्बे पत्र लिखकर उन समस्याओं के समाधान में अपनी सहभागिता जताते हुए निम्न ज्ञापन सौंपे थे –

1. धर्म स्वातंत्र्य विधेयक 1978 के समर्थन में
2. असम आन्दोलन द्वारा बंगलादेशी मुसलमानों को भगाने की मांग के समर्थन में
3. 1986 में पोप के भारत आगमन के विरोध में
4. श्रीराम जन्म भूमि मंदिर निर्माण के समर्थन में आह्वान
5. सम्पूर्ण नागा समाज सनातनधर्मी हिन्दू हैं और नागालैंड भारतवर्ष का अभिन्न अंग है। धर्मान्तरण के कारण नागा समाज के एक वर्ग के अन्दर असमंजस की स्थिति पैदा हुई है।

पुरस्कार

1. स्वतंत्रता सेनानी ताम्र पत्र, 15 अगस्त 1972
2. पद्म भूषण, 26 जनवरी 1982
3. विवेकानन्द सेवा पुरस्कार, 31 जनवरी 1987
4. बिरसा मुंडा पुरस्कार, 2 फरवरी 1996 (मरणोपरांत)
5. एक रुपये का डाक टिकट, 1996
6. रानी गाइदिन्ल्यू स्त्री शक्ति पुरस्कार, 2000
7. रानी रुपुइलियानी पुरस्कार, 1982

स्वर्गारोहण

17 फरवरी 1993 को लंग्काओ में 78 वर्ष की आयु में इनका स्वर्गवास हो गया। ■

बागमुंडी छात्रावास का निर्माण कार्य

छात्रावास एक ऐसा स्थान जहाँ विद्यार्थी एक दूसरे से मिलकर रहते हैं। प्रात:काल से ही जीवन-कौशल का अभ्यास शुरू हो जाता है। राष्ट्र हित में तत्पर रहने वाले भावी नागरिकों के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। कल्याण आश्रम के छात्रावास ऐसे वनवासी छात्रों के लिए होते हैं, जिनके गाँव में शिक्षा की सुविधा नहीं होती एवं पढ़ाई के लिये इन्हें बहत दूर जाना पड़ता है।

कल्याण आश्रम ने वनवासी बच्चों के सम्पूर्ण विकास के लिए पश्चिम बंगाल के प्रत्येक जिले में छात्रावास प्रारम्भ किये हैं। बागमुंडी छात्रावास बालकों के लिए बनने वाला पहला छात्रावास है जिसका निर्माण स्व. बसंतराव भट्ट जी के अनथक प्रयासों एवं कृतिवास महतो की उदारता से अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में हुआ। यहाँ वनवासी बालकों के बहुमुखी विकास का सतत प्रयत्न जारी है।

यह लिखते हुए अयंत हर्ष हो रहा है कि बागमुंडी छात्रावास के भवन का नवीनीकरण हो रहा है। भवन निर्माण के लिये समाज के उदारमना महानुभावों का भरपूर सहयोग मिल रहा है। ■

स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में राष्ट्रवंदना
सूर्य नमस्कार कार्यशाला

- *सीमा रस्तोगी, सह मंत्री, कोलकाता महानगर महिला समिति*

हो स्वस्थ तन और स्वस्थ मन,
रहें जागरूक जन-जन,
स्वास्थ्य है सबका अधिकार,
मिले सभी को यह उपहार।

बचपन से ही हम सुनते आ रहे हैं कि सेहत कामयाबी की कुंजी है। किसी भी व्यक्ति को अगर जीवन में सफल होना है तो इसके लिए सबसे पहले उसके शरीर का सेहतमंद होना जरूरी है। इसी बात को अमली जामा पहनाने के लिये ही **स्वस्थ भारत ट्रस्ट** की ओर से देश मे स्वस्थ भारत मिशन का आयोजन किया जा रहा है। यह वर्ष आज़ादी का अमृत महोत्सव है। आजादी की 75वीं वर्षगांठ को आजादी के अमृत महोत्सव के तौर पर मनाया जा रहा है। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एवं अन्य आनुषांगिक संगठनों ने हिंदू संस्कृति और उसकी महानता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से **सूर्य नमस्कार सप्ताह (15-23 जनवरी)** मनाने का आह्वान किया जिसमें 75 करोड़ सूर्य नमस्कार का लक्ष्य लिया गया। इस योगामृत महोत्सव के कार्यक्रम में 150 देशों के प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस योगामृत महोत्सव के जरिए विश्व में एकता और स्वास्थ्य चेतना का शुभारंभ होगा।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम की कोलकाता – हावड़ा महानगर भगिनी कार्यकर्ताओं ने निश्चित किया कि 20 जनवरी से 22 जनवरी तक आभासी माध्यम से सूर्य नमस्कार कार्यशाला का आयोजन किया जाए। इस कार्यशाला में महानगर की सभी महिला समितियों की कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

योग शिक्षक **श्री प्रणब सिही** ने तीन दिनों तक महिलाओं के स्वास्थ्य के संरक्षण और आरोग्य के लिए सूर्य नमस्कार के दस आसन सिखाए, अभ्यास करवाया। मंत्रोच्चार के साथ पुन: सूर्य नमस्कार की पुनरावृत्ति कराई। योग शिक्षक श्री प्रणब सिही ने शरीर के विभिन्न अंगों के लिए सूर्य नमस्कार की उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला। इस कार्यशाला का सबसे प्रिय आकर्षण रहा कुर्सी पर बैठकर सूर्यनमस्कार करना। जो महिलाएँ खडे होकर सूर्य नमस्कार नहीं कर सकती उन्हे कुर्सी पर बिठाकर सूर्य नमस्कार करवाया गया। सभी बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और पुन: पुन: इस प्रकार की कार्यशाला आयोजित करने का संकल्प लिया। ■

पद्मश्री कमली सोरेन का हुआ सम्मान

कोलकाता. वनवासी कल्याण आश्रम, उत्तर बंगाल की जनजाति कार्यकर्ता गुरु मां कमली सोरेन को सामाजिक कार्यों के लिए देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पद्मश्री सम्मानित किया. श्रीमती सोरेन लंबे समय से उत्तर बंगाल के आदिवासियों के उत्थान के लिए काम करती आयी हैं. उन्होंने जनजातियों की स्वास्थ्य सुरक्षा, शिक्षा विकास के साथ-साथ पर्यावरण के लिए भी काम किया है. वहां के आदिवासी उनको गुरु मां कह कर संबोधित करते हैं. उनके कई सामाजिक कार्यों के लिए उन्हें पद्मश्री सम्मान से अलंकृत किया गया है. श्रीमती सोरेन को पूर्वांचल कल्याण आश्रम की ओर से भी कल्याण भवन में आयोजित विशेष कार्यक्रम के दौरान मंगलवार को सम्मानित किया गया. इस सम्मान समारोह में पूर्वांचल कल्याण आश्रम के सभी पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे. यह जानकारी शिक्षिका और कल्याण आश्रम की सदस्य कार्यकर्ता श्रीं रंजना त्रिपाठी ने दी. उन्होंने बताया कि श्रीमती सोरेन की उपलब्धियों व उनके कार्यों से अन्य महिलाओं को भी समाज के लिए कुछ करने की प्रेरणा मिलेगी.

शोक संवाद

निशिकांत जी नहीं रहे

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं पूर्व छात्रावास प्रमुख श्री निशिकांत जी जोशी हमारे बीच नहीं रहे। 26 जनवरी 2022 को सुबह 6.45 को रायपुर (छत्तीसगढ) में अस्पताल में उनका स्वर्गवास हुआ। उनकी आयु 75 वर्ष की थी।

13 फरवरी 1947 को जन्मे निशिकांत जी मूलत: नागपुर के स्वयंसेवक थे। शिक्षा प्राप्त करने के बाद 1970 से 77 में वे असम और मणिपुर में संघ के प्रचारक रहे। वहाँ से वापस आने के बाद उन्होंने अध्यापन का भी काम किया। माधवी ताई जी के साथ विवाह होने के बाद तत्कालीन सरसंघचालक मा. बालासाहेब देवरस जी के आदेशानुसार 1981 निशिकांत जी और माधवी ताई ने वनवासी कल्याण आश्रम का पूर्णकालीन कार्यकर्ता के नाते काम प्रारंभ किया। मणिपुर, असम, छत्तीसगढ़ में विभिन्न दायित्व लेकर उन्होंने काम किया। असम, छत्तीसगढ प्रांत संगठन मंत्री, मध्य क्षेत्र संगठन मंत्री, पश्चिम क्षेत्र संगठन मंत्री, अखिल भारतीय छात्रावास प्रमुख जैसे विभिन्न दायित्व निभाते हुए उन्होंने कल्याण आश्रम के विकास में अपना योगदान दिया। निशिकांत जी के जाने से कल्याण आश्रम ने एक दीर्घानुभवी, स्नेहशील और सभी कार्यकर्ताओं का प्रेरक आधार खो दिया है। दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि। ■

सुर-साधिका का महाप्रयाण

भारत-रत्न, स्वर-कोकिला लता मंगेशकर जी के निधन से स्वर जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। वे सात दशक तक जादुई स्वर छलकाने वाला कलश बनी रही। भारतीय संगीत को वैश्विक मंच पर लोकप्रिय बनाने में उनका अतुलनीय योगदान रहा। वे सदैव भारतीय संस्कृति से जुड़ी रही। उनके स्वर की मिठास को शब्दों में वर्णित करना मुश्किल है। उनकी वाणी में अमृत घुला हुआ था। 93 वर्ष का इतना सुंदर और धार्मिक जीवन विरलों को ही प्राप्त होता है। लगभग 5 पीढ़ियों ने उन्हें मंत्रमुग्ध होकर सुना है और हृदय से सम्मान दिया है।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम परिवार की ओर से सुर-साधिका को भावपूर्ण विनम्र श्रद्धांजलि! ■

लिथुआनिया: वैदिक संस्कृति राष्ट्र

- मेजर सुरेंद्र माथुर (से.नि.)

(मेजर साहब का यह आलेख सुधी पाठकों की ज्ञान–मंजूषा के लिए पवित्र सामग्री है। यह आलेख हमें बाल्टिक देशों में भारतीय संस्कृति की छाप से परिचित तो कराता ही है, साथ में यह भी स्पष्ट करता है कि भारतीय संस्कृति की अजस्र धारा अक्षुण्ण है, उसे विश्व में स्नेह और सत्कार दोनों मिला है। आइए पढ़ते हैं मेजर साहब को उन्हीं के शब्दों में .....सं.)

लिथुआनिया बाल्टिक देशों में एक प्रमुख राष्ट्र है एवं पौराणिक प्रुस्सिया (Prussia) संस्कृति क्षेत्र में मुख्य राष्ट्रों में से आता है। उनके रोमुवा (Romuva) समुदाय के धार्मिक गुरू जोनास ट्रिंकुनास (Jonas Terinkunas) ने पहली मुलाकात में यह कहकर आश्चर्य चकित कर दिया कि वे राजपूत हैं और उनके समुदाय की वैदिक संस्कृति है। ऐसा सार्वजनिक रुप से घोषित करने वाले वे पहले यूरोपीय विदेशी गुरूजन हैं। उन्हें लिथुआनिया की राष्ट्रपति ने वहाँ के सर्वोच्च जोनास बसनवीसियस पुरस्कार से सम्मानित भी किया।

रोमुवा (Romuva) आज भी अपने धर्म, संस्कृति और आस्थाओं के प्रति सजग है और पौराणिक संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए संघर्षमयी हैं। वैसे तो वे बाल्टिक (Baltic) क्षेत्र में स्थित है लेकिन उनका पौराणिक सांस्कृतिक क्षेत्र प्रुस्सिया (Prussia) कहलाता है जिसमें लिथुआनिया, लेटविया, पोलैंड, यूक्रेन, इस्टोनिया, बेलारूस, कॉलिनिग्रैड (रशिया) आदि के क्षेत्र आते हैं।

Baltic देशों में भी बहुत समानताएँ हैं। ये Prussia सांस्कृतिक क्षेत्र में आते हैं। यह बहुत ही पौराणिक क्षेत्र, सनातन हिन्दू संस्कृति से सदियों से जुड़ा हुआ

है। किसी समय Poland और Lithuania के गठबंधन में एक विशाल राज्य स्थापित हुआ था जो Baltic Sea से Black Sea तक फैला हुआ था। इनके देवी देवता जैसे सूर्य (Saule), लक्ष्मी जी (Laimi), काली माँ (Laima) आदि देवताओं से समानताएँ हैं। क्लिक भगवान जिन्हें वे Vytis कहते है, उनके राष्ट्रीय चिन्ह, ध्वज और सिक्कों में अंकित हैं। भगवान इंद्र (Perkunos) प्रमुख देवता हैं। स्वस्तिक उनका पौराणिक शुभ चिन्ह है। विवाह प्रथाएँ भी समान हैं।

सनातन हिन्दू संस्कृति से अनेक यंत्र तंत्र के शुभ चिन्ह हैं वैसे ही शुभ चिन्ह Lithuania वासियों के भी हैं।

धार्मिक गुरू जोनास ट्रिंकुनास जब भारत प्रवास पर आए तो उन्होंने चित्तौड़गढ. जाने के लिए निवेदन किया। उन्होंने बताया कि लिथुआनिया वासी चित्तौड़गढ़ के इतिहास से प्रेरणा लेते रहे हैं। लिथुआनिया वासियों ने भी चर्च की सेना से वैसा ही युद्ध तीन सौ वर्षों तक लड़ा लेकिन अंत में हमारे लोगों को भी जौहर करना पड़ा। यह एक हमारे इतिहास की बहुत ही दु:खद घटना थी।

रोमन साम्राज्य के प्रेरितों के पास चर्च की दो सेनाएं थीं, ट्यूटनिक ऑर्डर और लिवोनियन ऑर्डर, जो अन्य राज्यों को हराकर उन्हें धर्मांतरण के लिए मजबूर करती थीं। लातविया में लिवोनियन आदेश स्थापित किया गया था।

धार्मिक गुरू जोनास ट्रिंकुनास (Jonas Terinkunas) के निधन के बाद उनकी पत्नी इनिजा ट्रिंकुनिने (Inija Terinkuniene) रोमुवा (Romuva) समुदाय की प्रथम गुरू माता बनीं और वे क्रिव (Kerive) की उपाधि से सुशोभित हैं।

बाल्टिक (Baltic) वासियों की भाषा मूलत: संस्कृत प्रधान है। रोमुवा (Romuva) समुदाय एवं लिथुआनिया वासी का हज़ारों वर्षों का संघर्षपूर्ण जीवन रहा है और लिथुआनियाई शूरवीरों ने अपनी वैदिक संस्कृति और सभ्यता को आज भी सुरक्षित रखा है। हम भारतवासियों को उन पर गर्व है। इन्हीं कारणों से गायत्री परिवार के देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने धार्मिक गुरू जोनास ट्रिंकुनास एवं उनकी पत्नी और वर्तमान धार्मिक गुरु माता को डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने विश्वविद्यालय में लिथुआनिया भाषा का विभाग भी स्थापित किया है। यह एक सुंदर पहल है। लिथुआनिया की मशहूर गायिका वेत्रा ने "वन्दे मातरम्" (Vande Mataram) राष्ट्रीय गीत का गायन कर हर भारतवासी का दिल जीत लिया है।

लिथुआनियावासी भारत को दूसरी मातृभूमि मानते हैं। हम भारतीयों को सभी लिथुआनियावासियों पर गर्व है। ■

e-vidya के बढते कदम

- उमा गोयल, कोलकाता महानगर महिला सह संगठन मंत्री

गत दो वर्षों से कोरोना महामारी के कारण पूरी दुनिया में सभी का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है तथा बहुत बड़े बदलाव हमने देखे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा बदलाव आया कि पढाई ऑनलाइन होने लगी। शहरों में तो किसी तरह इस तरह के इंतजाम हुए परंतु गांव में जहां तकनीकी क्षेत्र अभी तक बहुत पिछड़ा हुआ है और सरकारी स्कूलों में कुछ भी उपाय नहीं किए गए वहां विद्यार्थियों की बहुत बड़ी हानि हुई है।

हमारे छात्रावासो में रह रहे वनवासी बच्चों को भी घर पर रहना पड़ा और पढ़ाई जारी रखने का कोई उपाय नहीं था। यही सब देखते हुए हमारी युवा समिति ने बंगाल के छात्रावासो में रहने वाले कक्षा 9 के ऊपर के विद्यार्थियों की ऑनलाइन कोचिंग प्रारंभ की। और e-vidya प्रोजेक्ट का जन्म हुआ।

कोलकाता शहर के बहुत से महानुभावों ने नि:स्वार्थ, नि:शुल्क सेवा प्रदान कर छात्रों को पढाया और उन्हें अच्छा लाभ हुआ। गत वर्ष माध्यमिक में बैठने वाले विद्यार्थियों का रिजल्ट भी अच्छा हुआ। वर्तमान में e-vidya प्रोजेक्ट का 3 बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियों के साथ tie up हुआ है: Price Waterhouse Coopers (PWC), Cognizant Technology Solutions, NTPC Farakka. जिनकी वजह से आज हम इस मुकाम पर पहुंच पाए हैं।

Cognizant के CSR wing ने अपने Digital Classroom Program के तहत कल्याण आश्रम द्वारा संचालित तीन छात्रावासों में, यानी पुरुलिया, गोसाबा और बेलपहाड़ी में अत्याधुनिक 65"LED panel with add on computer and webcam प्रदान किए हैं। इस एक डिवाइस की कीमत लगभग डेढ़ लाख रुपए हैं तथा इंटरनेट के द्वारा इसमें हर प्रकार की कॉन्फ्रेंस और मीटिंग की जा सकती है।

अब ऑनलाइन कक्षाएं और भी अच्छी प्रकार हो पा रही है जैसा कि संलग्न चित्रों में देखा जा सकता है। चित्र में भूगोल की 12th कक्षा की क्लास चल रही है जिसमें भारतीय विद्या भवन स्कूल में भूगोल की हेड ऑफ डिपार्टमेंट श्रीमती चंद्रावली मुखर्जी पढ़ा रही हैं।

कार्य का विस्तार करते हुए छोटी कक्षाओं के बच्चों को भी छात्रावास में बुलाकर अब पढ़ाया जाएगा। कार्य कठिन है पर राह सही है इसी आशा के साथ टीम e-vidya पूरे जोश के साथ आगे बढ़ रही है। ■

अनुकरणीय बनें शुभ आचरण तुम्हारा

- शशि मोदी, महिला सह संगठन मंत्री

अपने अनुकरणीय आचरण से देशवासी निरंतर माँ भारती के चरणों में शीश नवाते रहे। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऐसे बंधु, भगिनी और यहाँ तक कि कार्यकर्ताओं के परिवार के बच्चे भी वनवासी भाई बहनों के सर्वांगीण विकास के लिए अपना-अपना समर्पण लेकर प्रस्तुत थे। किंतु त्याग, बलिदान और समर्पण के कुछ ऐसे उदाहरण भी मिले, जो भावी पीढ़ी के लिए अनुकरणीय बन जाते हैं। ऐसे स्वनामधन्य लोगों का उल्लेख करना आवश्यक सा लगने लगता है।

अवसर था मकर संक्रांति के लिए लगने वाले कैम्प का। मकर संक्रांति का कैम्प कल्याण आश्रम कार्यकर्ताओं के लिए क्रांति का उद्घोष सा होता है। समर्पण-काल की इसी बेला में वयोवृद्ध **उमाशंकर जी केडिया** जो हृदय-रोग से ग्रस्त हैं एवं जिनके लिए लम्बी दूरी तय कर पाना कठिन था, कैम्प तक पहुँचने के लिए न जाने कितनी जगह पर बैठ–बैठकर वे अपनी समर्पण राशि स्वयं लेकर आए। वे चाहते तो अपने परिवार के किसी सदस्य से भी भिजवा सकते थे, किंतु उनके द्वारा स्वयं आकर कुछ देने का भाव हम सभी कार्यकर्ताओं के लिए उदारहण बन गया। देना बड़ी बात नहीं है, अपितु दातव्य के पीछे छिपा पवित्र मनोभाव महत्त्वपूर्ण है। हम सभी कार्यकर्ताओं की ओर से दानवीर आदरणीय उमाशंकर जी को सादर नमन।

★ इस समर्पण-सेवा में हमारे बच्चे भी पीछे नहीं हैं। प्रसंग एक कार्यकर्ता परिवार से जुड़ा है। परिवार में प्रतिदिन की चर्चा से उसे यह आभास तो हो चुका था कि समाज में एक ऐसा वर्ग भी है, जो सुख-सुविधाओं से वंचित है। मकर-संक्राति के पर्व पर सभी कुछ-कुछ दान करने वाले हैं। परिवार का नन्हा सदस्य **तैजस तुलस्यान** अपने छोटे-छोटे हाथों से अपना प्यारा गुल्लक लेकर आया। बताया कि अब उसका गुल्लक भर चुका है। उसमें कुछ और डालने की जगह नहीं बची है। इसलिए अब उसे तोड़ना आवश्यक हो जाता है। बाल हठ के आगे तो सभी को झुकना पड़ता है। गुल्लक तोड़ा गया। दस हज़ार रुपए थे उस गुल्लक में। नन्हा बालक बहुत खुश। बाकी लोग भी खुश। किंतु जब उसने बताया कि वह अब इस पूरी धनराशि को वनवासी समाज के लिए समर्पित करेगा, तो परिवार का प्रत्येक सदस्य अचम्भित रह गया। सभी को गर्व भी हुआ, कि इस बालक के निर्मल मन पर माता-पिता और परिवार के संस्कारों ने अमिट छाप छोड़ी है। हम सभी का आशीर्वाद हमारे नन्हे राजा हरिश्चंद्र को!

★ कार्यकर्ताओं का समर्पण और संबल ही संगठन की आत्मा है। ऐसे निष्ठावान कार्यकर्ताओं से अपना कल्याण आश्रम नित निरंतर गौरवांवित होता रहा है। मकरसंक्रांति के ठीक पहले एक सड़क दुर्घटना में अपनी एक भगिनी कार्यकर्ता **श्रीमती रंजना बियानी** की पैर की हड्डी टूट गई। चिकित्सक के परामर्श के फलस्वरूप दो महीने बिस्तर पर लेटकर बिताना है उनको। किंतु उनका भाव तो देखिए ... लेटे-लेटे दानदाताओं से संपर्क, उनके द्वारा दिए गए सहयोग का पूरा लेखा-जोखा रखना, रसीदें काटना, अन्य कार्यकर्ताओं को अनुप्रेरित करते रहना, फोन से संपर्क करते रहना अपनी दिनचर्या बना ली भगिनी कार्यकर्ता रंजना जी ने। नमन है बहन आपको। ■

कोलकाता हावड़ा महानगर ने आयोजित किया वनभोज कार्यक्रम

- डॉ. रंजना त्रिपाठी

मिलते रहने से संगठन और अधिक शक्तिसंपन्न होता है, इसी उद्देश्य को लेकर दिनांक 26 दिसम्बर 2021 को पूर्वांचल कल्याण आश्रम ने वनभोज कार्यक्रम आयोजित किया। यह दिन एक और कारण से भी महत्त्वपूर्ण बन जाता है, क्योंकि इसी दिन 26 दिसम्बर को ही वनयोगी बालासाहब ने छत्तीसगढ़के जशपुर नगर में 13 वनवासी विद्यार्थियों को लेकर संगठन का शुभारंभ किया था। यह दिन हम सभी के प्रेरणा पुरुष वनयोगी बालासाहब का जन्मदिन भी है।

कामधेनु गौशाला, सोदपुर में कोलकाता-हावड़ा महानगर पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित वनभोज कार्यक्रम में लगभग 200 बंधु-भगिनी कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में सम्मिलित बच्चे विशेष आकर्षण के केंद्र बने रहे।प्रात:काल जलपान के पश्चात् कार्यकर्ता संजीव खेतान और राजकुमार जी जैन के मनोरंजक खेल-कूद के आयोजन में बच्चों के साथ-साथ सभी कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तत्पश्चात् सभी कार्यकर्ताओं ने गो सेवा का पुण्य प्राप्त किया। गोमाता के स्नेहभरे नेत्र हमसभी को उनसे दूर ही नहीं होने दे रहे थे। किंतु समय की मर्यादा थी, अत: दोपहर का भोजन लेना पड़ा। इसके उपरांत परिचय सत्र और पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित हुआ। चारों ओर हरी-भरी प्रकृति से घिरे प्रागंण को कार्यकर्ताओं की दिव्य उपस्थिति दैवत्व प्रदान कर रही थी। भोजन-व्यवस्था का दायित्व संभाले हुए पवन जी के वात्सल्य भाव ने सभी को विशेष आनंद प्रदान किया। संगठन मंत्री संदीप जी चौधरी ने सभी के प्रति आभार प्रदर्शन किया। ■

कविता .....

ज्ञान-दीप

- लक्ष्मीनारायण भाला

दीप ज्ञान का धर निज-कर में
भ्रमित जगत को राह दिखा दें,
जीवन का हो एक यही व्रत,
दो यह वर हे मात शारदे।। ध्रु.।।

वसुधा-हित-निर्मित यह दीपक
जन्मस्थली भारत की माटी,
इस दीपक का स्नेह सनातन,
बाती है पुरखों की थाती।
इसी दीप की अमल ज्योति बन
भारत-जन जग को उजला दें ।। 1 ।।

इसकी किरणों की आभा है
ज्ञान और विज्ञान विकासी,
ऋषि-मुनियों ने निज जीवन दे
दिया इसे जीवन अविनाशी।
हम भी एक किरण बन उनको
परंपरा अविरत विकसा दें।। 2 ।।

जड़-चेतन में छिपे ईश को
इस दीपक ने ही दर्शाया,
सौर-जगत, ज्योतिष-गणना के
भेद खोल, जग को हर्षाया।
आलोकित अक्षय प्रवाह को
वर्तमान-अनुकूल बना दें।। 3 ।।

पद और धन की आस नहीं हो,
प्यास न हो जीवन-विलास की,
ऐसा हो आचरण सहज ही
मानवता ले गति विकास की
पंचमुखी-शिक्षा अपना कर
एक दीप से दीप जला दें।। 4 ।। ■

वनभोज : गोसेवा का महनीय अवसर

वन-भोज में गो-सेवा के अनुभव का कैसे हो वर्णन,
शब्दातीत भावों को कैसे धार सकें स्वर-व्यञ्जन।
प्रकृति-माँ की निर्मलता में गोमाता के प्रेम का स्पन्दन,
आज तलक युगल-माता के स्नेह में अभिभूत मन-दर्पण।।

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com